वर्ष : 11 अंक : 2 अप्रैल–जून 2016

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. मंगला राय, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का अप्रैल–जून, 2016 (वर्ष 11:2) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में आयोजित "अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी" नवीनतम कृषि तकनीकों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिसमें किसानों की भारी भागीदारी हमारा उत्साहवर्धन करती है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आगामी 100वां अखिल भारतीय किसान मेला नये कलेवर में देखने को मिलेगा। यह कृषि वैज्ञानिकों की कृषक समुदाय के कल्याण के लिए एवं अंततः राष्ट्र के लाभ के लिए उनके सौम्य प्रयासों को दिखाने के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य हमें साथी किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के सृजन एवं उनके स्थानान्तरण से है। समय के साथ आवश्यकताएं एवं प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं। पुराने दिनों की तकनीके एवं हस्तानान्तरण प्रक्रिया धीरे–धीरे अप्रचलन की तरफ जा रही हैं। आज भूमि, जल, मृदा स्वास्थ्य, कम होती उत्पादकता, जलवायु परिवर्तन और आजीविका की विभिन्न उभरती चुनौतियों को हल करने की सम्भावनाओं को तलाशे जाने की आवश्यकता है।

हमें साथी किसानों की चुनौतियों के समाधान एवं सहक्रिया सम्बन्ध सृजित करने के लिए साथ काम करना होगा। जब विश्व सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के सर्वांगीण आगमन के साथ एक वैश्विक गांव के रूप में उभरने के लिए एकजुट है, तो हमें इस परिवेश में कृषि विस्तार के दृष्टिकोण की दिशा भी बदलने की जरूरत है। समय तेजी के साथ निकल रहा है। हमें आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तेजी से आगे बढ़ना होगा।

देश के प्रथम कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर का 100वां अखिल भारतीय किसान मेला हमारे राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली को दर्शायेगा। देश के समस्त कृषि विश्वविद्यालय, डीम्ड कृषि विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शोध केन्द्र/संस्थान हर समय सफलतापूर्वक कृषि क्षेत्र में देश की उभरती उम्मीदों को पूरा करने के लिए अनवरत् कार्य कर रहें हैं। पन्तनगर विश्वविद्यालय भी इस यात्रा में जो अभी भी भूख एवं अल्प पोषण से पीड़ित हैं, उनमें खाद्य एवं पोषण सुरक्षा लाने के लिए लगातार योगदान दे रहा है।

हमारा 100वां अखिल भारतीय किसान मेला नये कलेवर में विशाल कृषक समुदाय जो देश के भरण–पोषण में अमूल्य योगदान दे रहे हैं, के समस्याओं के निराकरण के लिए नवीनीकृत प्रतिबद्धता को दर्शायेगा। मैं ग्रामीण आबादी की अपेक्षाओं को और ऊपर उठाने के लिए आप सभी उर्जित जुनून को शुभकामनाएँ देता हूँ साथ ही पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में अक्टूबर 17–20, 2016 को आयोजित होने वाले अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में हिस्सेदारी के लिए आपको सादर आमंत्रित करता हूँ।

शुभकामनाएँ।

(मंगला राय)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र पर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 18 मई, 2016 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मा. सांसद टिहरी गढ़वाल श्रीमती माला राज्य लक्ष्मी शाह ने मुख्य अतिथि के रूप मे प्रतिभाग किया। सांसद महोदया ने भारत सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ व्यापक स्तर पर किसानों को पंहुचाने हेतु उनको अधिक से अधिक जागरूक करने का सुझाव दिया। इस कार्यक्रम मे भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान संस्थान के निदेशक, नाबार्ड, देहरादून के महाप्रबन्धक, मुख्य विकास अधिकारी, देहरादून, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून के उपनिदेशक, एग्रीकल्चर इंश्योरेन्स कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, देहरादून के क्षेत्रीय प्रबन्धक एवं अन्य रेखीय विभागों के अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

अवसर पर देहरादून के समस्त छः विकास खण्डों के 900 किसानों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

- केन्द्र द्वारा कुल 25 प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर किया गया, जिसमे 830 कृषकों को सब्जी विज्ञान, बागवानी, फसल विज्ञान, पोषण प्रबन्धन, पशुपालन, कुक्कुट पालन, गृह विज्ञान, पादप सुरक्षा इत्यादि विषयों से सम्बन्धित व्यावहारिक तकनीकों की जानकारी किसानों को उपलब्ध करायी गयी। गृह विज्ञान के अन्तर्गत केन्द्र पर बुनाई–कढ़ाई मे उद्यमिता विकास विषय पर दस दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमे 12 ग्रामीण युवतियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा 11 किसान गोष्ठी मे प्रतिभाग कर लगभग 1237 किसानों को उनकी कृषि सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण हेतु तकनीकी जानकारी दी गयी।
- टी.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत लहसुन की एग्री फाउण्ड पार्वती प्रजाति के 40 प्रदर्शनों का आयोजन 1.6 है. क्षेत्रफल मे किया गया। इसी प्रकार

टी0एस0पी0 परियोजना के अन्तर्गत प्रदर्शन

परियोजना के अन्तर्गत प्याज की एग्री फाउण्ड लाईट रेड प्रजाति के 30 प्रदर्शनों का आयोजन 1.2 है. क्षेत्रफल मे किया गया। टमाटर मे हिमसोना हाईब्रिड के 30 प्रदर्शनों का आयोजन 2.0 है. क्षेत्रफल मे किया जा रहा है। परियोजना के अन्तर्गत इन सभी प्रदर्शनों का आयोजन चकराता विकास खण्ड के हटाल एवं सैन्ज तथा कालसी विकास खण्ड के उत्पाल्टा जनजातीय गांवों मे किया गया।

- धान की पूसा बासमती–1509 किस्म के 12 प्रदर्शनों का आयोजन 2.0 है. क्षेत्रफल मे जून, 2016 से किया जा रहा है। इस प्रजाति की विशेषता यह है कि अन्य बासमती प्रजातियों की तुलना मे यह 15–20 दिन कम समय लेती है तथा इसकी उत्पादन क्षमता भी लगभग 20 प्रतिशत अधिक है। नेशनल फूड सिक्योरिटी मिशन परियोजना के अन्तर्गत खरीफ दलहन में उर्द प्रजाति पन्त उर्द–31 के 25 प्रदर्शनों का आयोजन 10.0 है. क्षेत्रफल मे किया जा रहा है।
- बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के अन्तर्गत 20 प्रदर्शनों का आयोजन कैरी देवेन्द्रा प्रजाति पर किया गया। इसके अन्तर्गत 20 किसानों को लाभान्वित किया गया। कैरी देवेन्द्रा प्रजाति द्विकाजी प्रयोजन हेतु सर्वोत्तम पायी गयी है। इसके एक कुक्कुट से एक वर्ष मे 210–220 अण्डे प्राप्त हो जाते हैं, जो कि स्थानीय स्तर पर पाली जाने वाली कुक्कुटों से प्राप्त अण्डे की तुलना मे 17–20 प्रतिशत अधिक अण्डे का वजन होता है तथा कैरी देवेन्द्रा प्रजाति की खाद्य रूपान्तरण दक्षता भी स्थानीय कुक्कुटों की तुलना मे 18–20 प्रतिशत अधिक पायी गयी है। पशुपालन के अन्तर्गत दुधारू पशुओं मे जनन एवं प्रजनन क्षमता के विकास हेतु सूक्ष्म पोषक तत्वों के सेवन विषय पर 30 प्रदर्शनों का आयोजन कर, 30 किसानों को लाभान्वित किया गया।
- गृह विज्ञान के अन्तर्गत पोषण वाटिका पर 40 प्रदर्शनों का आयोजन 0.8 है. क्षेत्रफल मे किया गया। हाल के वर्षों मे पोषण वाटिका पर किये गये प्रदर्शनों से महिलाओं में पोषण वाटिका मे घरेलू स्तर पर सब्जी उत्पादन के लिये रूझान बढ़ रहा है।
- केन्द्र पर गेंहू की प्रजाति एच.एस.–507 का 47.4 कु. तथा मसूर (पन्त मसूर–8) का 1.40 कु. बीजोत्पादन किया गया। यह दोनो प्रजातियां पर्वतीय क्षेत्रों मे भी खेती के लिये अनुमोदित हैं।
- केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों के अन्तर्गत 03 प्रक्षेत्र दिवस आयोजित कर 92 किसानों को लाभान्वित किया गया, 58 डायग्नोस्टिक विजिट कर 453 किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त 87 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 873 किसानों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी दी गयी।
- केन्द्र पर देहरादून दूरदर्शन द्वारा 08 बार विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक वार्ताओं की रिकार्डिंग कर प्रसारित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में सस्य विज्ञान, पादप सुरक्षा, मृदा विज्ञान एवं गृह विज्ञान की नवीन तकनीकों पर 11 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसमें जनपद के 191 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- जनपद के विभिन्न गांवों में सस्य विज्ञान, मृदा विज्ञान, पादप सुरक्षा एवं गृह विज्ञान की नवीनतम तकनीकियों पर 39.70 है. कृषक प्रक्षेत्र पर 195 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये। साथ ही 35 कृषक प्रक्षेत्रों पर विभिन्न तकनीकियों के कृषक प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये गये।
- केन्द्र के तत्वाधान में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अन्तर्गत एक कृषक सम्मेलन तथा कृषि प्रदर्शनी का आयोजन ग्राम–इमलीखेड़ा में किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य कृषकों में

उद्घाटन अवसर पर कृषकों को सम्बोधित करते हुए मा. सांसद हरिद्वार डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक'

प्रधानमंत्री फसल बीमा के प्रावधानों और लाभ के विषय में जागरूकता लाना था। इस अवसर पर मा. सांसद हरिद्वार, डा. रमेश पोखरियाल ''निशंक'' मुख्य अतिथि रहे। कृषकों के ज्ञानवर्धन हेतु कृषि प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं को प्रदर्शित किया गया। सभी रेखीय विभागों (कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य, गन्ना एवं चीनी उद्योग आदि) ने भी अपने विभागों से सम्बन्धित प्रदर्शनी लगाई। इस अवसर पर मुख्य आकर्षण कृषि बीमा कम्पनी इण्डिया लिमिटेड द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के विषय पर प्रदर्शित स्टॉल रहा। साथ ही इफ्को, 02 कीटनाशी तथा 02 ट्रैक्टर कम्पनियों ने स्टॉल लगाये। कार्यक्रम में एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें कृषि बीमा कम्पनी इण्डिया लिमिटेड द्वारा अपने प्रावधानों एवं लाभो की जानकारी दी गई। साथ ही वैज्ञानिकों ने भी समसामयिक कृषि विषयों पर चर्चा की। जनप्रतिनिधियों सहित सभी ब्लाकों के कृषकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

- केन्द्र के तत्वाधान में जून 28–30, 2016 को एक तीन दिवसीय अन्तर्राज्यीय प्रशिक्षण ''बेमौसमी सब्जी उत्पादन'' विषय पर आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जनपद के कृषकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसका प्रायोजन आतमा परियोजना सिरमौर द्वारा किया गया। इसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बेमौसमी सब्जी उत्पादन हेतु प्रजातियां, उर्वरक प्रबन्धन, पादप सुरक्षा तथा जैविक खेती के विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।
- केन्द्र पर आर्या परियोजना द्वारा स्थापित की गई मौनपालन इकाईयों का जून 22, 2016 को निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा अवलोकन किया गया। इस अवसर पर डा. पुरूषोत्तम कुमार, प्रभारी अधिकारी एवं डा. दीप्ति चौधरी, सहायक प्राध्यापक (कीट विज्ञान) भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर डा. डबास ने मौनपालन कर रहे आर्या के लाभार्थी युवा श्री संजय कुमार एवं श्री हितेश कुमार की मौनपालन इकाईयों का निरीक्षण भी किया। निदेशक प्रसार शिक्षा ने मौनपालको से इस कार्य में उनके अनुभवों के विषय मे जानकारी ली। निदेशक प्रसार शिक्षा ने मौनपालन इकाईयों की सराहना करते हुए युवाओं के उन्नत व्यवसाय की कामना की।

मौनपालन इकाईयों का अवलोकन करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र एवं केन्द्र के बाहर 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 69 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम खाद्य पदार्थ के प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं धान के बीज उपचार विषय पर आयोजित किये गयें।
- केन्द्र के मत्स्य वैज्ञानिक डा. एस.के. शर्मा द्वारा मत्स्य पालन पर तकनीकी मार्गदर्शन देते हुए 10 प्रदर्शनों का आयोजन किया गया एवं केन्द्र की गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा पोषण वाटिका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 50 प्रदर्शन ग्राम ढाकी एवं ग्राम बन्नाखेड़ा में आयोजित किये गये। महिलाओं को पौष्टिक सब्जी उत्पादन एवं उनका प्रतिदिन उपयोग करने हेतु प्रेरित किया गया। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन हेतु 30 कृषको का चयन भिण्डी, मिर्च, बैगन सब्जी के प्रदर्शनो के लिये किया गया।
- केन्द्र द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अर्न्तगत एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किच्छा में किया गया, जिसमें मा. सांसद नैनीताल, श्री भगत सिंह कोश्यारी ने कृषकों को सम्बोधित कर इस योजना के लाभ लेने हेतु जागरुक किया। मा. विधायक किच्छा, श्री राजेश शुक्ला ने भी प्रधानमंत्री फसल बीमा लाभदायक बताते हुए कृषकों का इसे अपनाने हेतु प्रेरित किया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी ने इस योजना से कृषकों को अवगत कराया और बताया कि फसल बीमा कृषकों की फसलों से जुडें जोखिम से होने वाले नुकसान से रक्षा करने का माध्यम है। इसके द्वारा किसानो को अचानक आये आपदा से होने वाले नुकसान की भरपाई की जाती है।

गोष्ठी के आयोजन अवसर पर मंचासीन मा. सांसद भगत सिंह कोश्यारी

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 5 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 367 कृषक लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा 95 प्रक्षेत्र भ्रमण जनपद ऊधमसिंहनगर के ग्रामों में किये गए इसमें 482 कृषक (महिला/पुरुष) लाभान्वित हुए। प्रक्षेत्र भ्रमण छतरपुर, बन्नाखेडा, आनन्दखेड़ा, भोगपुर, बिढोश, कुण्डोरा, बीरपुर, दरऊ, खरसामा खानपुर, मेहराजगंज आदि में किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा दो शोध पत्र प्रकाशित किये गए एवं 10 बार केन्द्र की गतिविधियाँ विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।
- मूगँफली फसल उत्पादन विषय पर ग्राम छतरपुर में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन जून 06, 2016 को किया गया, जिसमें पन्तनगर विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास एवं निदेशक अनुसंधान केन्द्र डा. जे.पी. सिंह द्वारा कृषको को मूँगफली उत्पादन की तकनीकी जानकारी प्राप्त करने एवं गर्मी के धान के विकल्प के रुप में उगाने के लिये मार्गदर्शन किया गया। इस अवसर पर डा. सी. तिवारी ने कृषकों को उत्पादन तकनीकी एवं अर्थिकी से अवगत कराया।

प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा

- जून 09, 2016 को ग्राम अनन्दखेड़ा एवं जून 20, 2016 को ग्राम ढाकी में ट्राइबल सब प्लान योजना के अर्न्तगत कृषि यंत्र फावड़ा, खुरपी इत्यादि का विवरण कर कृषको को उपयोग करने हेतु जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 31 प्रशिक्षणों (कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओ हेतु प्रशिक्षण) का आयोजन किया गया, जिसमें 585 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- अप्रैल 10, 2016 एवं मई 29, 2016 को केन्द्र द्वारा मा. सांसद अल्मोड़ा–पिथोरागढ़, श्री अजय टम्टा की अध्यक्षता में एक दिवसीय प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ब्लाक भिकियासैंण के ग्राम जालली एवं ब्लाक हवालबाग के ग्राम खूट धामस में कराया गया, जिसमें फसल बीमा योजना के बारे में कृषकों को जानकारी दी गयी। इस अवसर पर 1002 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारी कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया। साथ ही 08 रेखीय विभाग, ग्राम्य एवं स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा अपने विभाग द्वारा चलाई जा रही योजना को स्टॉल लगाकर प्रदर्शित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मा. सांसद श्री अजय टम्टा

- अप्रैल 23, 2016 को पन्तनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मंगला राय जी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र मटेला अल्मोड़ा का भ्रमण किया गया। अपने भ्रमण के दौरान उन्होंने कीवी, माल्टा, मौसमी, नीबू, आडू, नाशपाती एवं औषधीय एवं सगंध पौध इकाईयों का भ्रमण किया। जलवायु परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्र पर चल रहे फव्वारा एवं टपक सिंचाई तकनीक को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया जिससे पानी की प्रत्येक बूंद का अधिकतम सदुपयोग करते हुए पैदावार बढ़ायी जा सके। कुलपति जी ने लघु कृषि यंत्रों जैसे पावर टिलर, सीड ड्रिल, हैड हो व अन्य छोटे कृषि यंत्रों को कृषक स्तर तक ले जाने का सुझाव दिया, जिससे लघु एवं मध्यम कृषक नयी कृषि तकनीक का प्रयोग कर ज्यादा से ज्यादा लाभ ले सकें।

केन्द्र भ्रमण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक

- जून 15, 2016 को संयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान), डा. डी.सी. डिमरी एवं प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), डा. बी.एस. कार्की द्वारा केन्द्र का भ्रमण किया गया। उनके द्वारा केन्द्र पर अनार एवं नीबू के नये पौध लगाने हेतु सुझाव दिया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास मे 15.03 है. क्षेत्रफल पर 228 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते है एवं कृषक की समस्याओं का समाधान भी मौके पर कर रहे है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास मे 29 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 593 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा ग्राम–भुरमुनी, ब्लॉक–बिण में अप्रैल 22, 2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मा. सांसद अल्मोड़ा–पिथौरागढ़ श्री अजय टम्टा ने कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसानों के लिए यह अब तक की सबसे कम प्रीमियम दर की योजना है। इस योजना में खाद्यान्न, दलहन, तिलहन फसलों के लिए एक मौसम, एक दर होगी। पहली बार जल भराव को स्थानीय जोखिम में शामिल करने के साथ–साथ फसल कटाई के बाद भी प्राकृतिक आपदा के जोखिम को भी इसमें शामिल किया गया है।
- विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मंगला राय जी द्वारा जून 12–16, 2016 तक जनपद पिथौरागढ़ का भ्रमण किया गया। जून 12, 2016 को कुलपति द्वारा केन्द्र के गैना एवं ऐंचोली प्रक्षेत्र का भ्रमण कर वहाँ चल रहे प्रगति कार्यों की समीक्षा कर संतोष व्यक्त किया गया। जून 13, 2016 को डा. राय द्वारा रेखीय विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर जनपद से ग्रामीण युवाओं के पलायन एवं जिले में एक ओर कृषि विज्ञान केन्द्र खोलने के स्थान के बारे में विचार–विमर्श किया गया। इसके बाद डा. राय द्वारा डीडीहाट ब्लॉक में उद्यान शोध केन्द्र, शानदेव का भ्रमण किया गया। जून 14, 2016 को मा. कुलपति जी द्वारा मुनस्यारी का भ्रमण करने के बाद नारायण आश्रम में संरक्षित खेती के बारे में कृषकों को जागरूक किया गया। जून 15, 2016 को कुलपति द्वारा मुनस्यारी के निकट बलतीर में आलू फार्म का निरीक्षण किया गया एवं गेहूँ, आलू एवं सरसों के बीज उत्पादन के सम्बन्ध में कृषकों से चर्चा की।

केन्द्र भ्रमण के दौरान मंचासीन कुलपति, डा. मंगला राय

- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर संचालित विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत् फल एवं सब्जी पौध उत्पादन हेतु 03 पॉलीहाउस एवं 01 शेडनेट का निर्माण किया गया है। इनमें उन्नतशील प्रजातियों को उगाकर कृषकों को पत्तागोभी के 12000, टमाटर के 10000, शिमला मिर्च के 10000, लौकी के 2500 एवं कद्दू के 150 पौध कृषकों को विक्रय किए गए हैं।
- केन्द्र पर नवरोपित फल–वृक्षों, प्रक्षेत्र पर स्थित फल एवं सब्जी की नर्सरी एवं वृक्षों की सिंचाई हेतु टपक सिंचाई पद्धति की स्थापना कर दी गयी है। वर्तमान में केन्द्र के लगभग चौथाई प्रक्षेत्र एवं सभी पॉली हाउस को टपक सिंचाई पद्धति से जोड़ दिया गया है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर क्रमशः 12 एवं 14 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया जिसमें 239 एवं 290 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। ग्रामीण बेरोजगारों के लिए 01 रोजगारपरक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसके द्वारा 10 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। 01 प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया जिसमें 19 कृषकों ने प्रतिभाग किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 65 भ्रमण किए गये जिसके द्वारा 533 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु 337 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 टीवी कार्यक्रम दिए गए और प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न समाचार पत्रों में 03 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों की जानकारी हेतु 03 लेख प्रकाशित किए गए। केन्द्र द्वारा ग्राम–डुंगरी में अप्रैल 05, 2016 को गेहूँ की प्रजाति वी.एल. –829 पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजिन किया गया जिसमें 25 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

प्रक्षेत्र भ्रमण का आयोजन

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में धान–3.0 है., मंडुआ 1.0 है., सोयाबीन–3.0 है., सोयाबीन (टी.एस.पी. के अंतर्गत)–1.0 है., चना 0.5 है., लोबिया 1.0 है., टमाटर 0.5 है., पत्तागोभी 0.5 है., फ्रासबीन 0.5 है. में लगाया गया। इसके अतिरिक्त 14 परिवारों को 45 बकरियों एवं 09 परिवारों की 25 दुधारू पशुओं को प्रदर्शन के अंतर्गत् खनिज–मिश्रण वितरित किया गया है।

पशुचिकित्सा एंव पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय

- विभाग द्वारा दिनांक 28 मार्च 2016 से 6 अप्रैल 2016 तक वी.ए.सी.एम. के लिए 'Minor Veterinary Services & First Aid' विषय पर एक 10 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण ब्रुक हास्पिटल, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया तथा इसमें 22 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषकों, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्यों, विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) के सदस्यों, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.), प्रगतिशील कृषक एवं प्रसार कर्मियों हेतु फसल सुरक्षा प्रबन्धन (खरीफ); विभिन्न फसलों, फल वृक्षों एवं सब्जियों में जैव–उर्वरकों/जैव–रसायनों का उपयोग तथा बड़े एवं मध्यम वर्ग के कृषकों हेतु फार्मिंग सिस्टम माड्यूल विषयक 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 56 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 20 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, ऑपरेशन एण्ड मेन्टिनेन्स इक्विपमेन्ट, सब्जियों एवं दालों की उन्नत खेती, व्यावसायिक सब्जियों एवं फसलों की जैविक खेती, मधुमक्खी पालन एवं कृषि विविधीकरण आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 464 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर सात दिवसीय तक थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 404 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 590 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 36,360 के साहित्य एवं रू. 1,66,496 के धान्य फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

मैदानी क्षेत्रों में कृषि हेतु-

माह जुलाई:

- धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 3.0 लीटर या एनीलोफास 30 ई.सी. 1.65 लीटर मात्रा प्रति है. की दर से रोपाई के 3–4 दिन के अन्दर प्रयोग करें। अधिक उपजवाली किस्मों में नाइट्रोजन 180, फास्फोरस 60, पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. तथा सुगन्धित धान (बौनी) किस्मों में नाइट्रोजन 80–120, फास्फोरस 60 तथा पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें।
- मूंगफली की बुवाई जुलाई मध्य तक कर लें। गुच्छेदार प्रजातियों के लिए प्रति है. 80–100 कि.ग्रा. तथा फैलने वाली प्रजातियों के लिए 60–80 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें। फैलने वाली प्रजातियों में 45 सेमी. तथा गुच्छेदार प्रजातियों में 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 15–20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखें।
- गन्ना में जलभराव वाले खेतों से जल निकास की व्यवस्था करें। जुलाई के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की एवं अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त मिट्टी चढ़ाये। फसल की बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई करें। अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिए कार्बोफ्यूरान 3 जी. का 33 कि.ग्रा. प्रति है. को नमी की दशा में प्रयोग करें। पाइरिल्ला या सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 1.25 लीटर क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. की दवा को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. छिड़काव करें।
- बैंगन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए जुलाई के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में 60x60 सेमी. की दूरी पर सांयकाल के समय रोपाई करें।
- फूलगोभी की अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत में 50x30 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधने का कार्य प्रारम्भ करें।
- नीबूवर्गीय फल वृक्षों में कैंकर की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स–50 का छिड़काव करें। बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- अमरूद के फलदार बाग में नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग करें।
- पपीता में जल निकास का प्रबन्ध करें। तना विगलन की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स–50 घोल से छिड़काव करें।
- लीची के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें। नये पौधें तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह समाप्त कर लें।
- आंवला के बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। प्ररोह गांठ व रस्ट रोग की रोकथाम हेतु नुवाक्रान व इण्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें।
- नाशपाती में बीजू पौधों पर कलम बांधे। कज्जली रोग की रोकथाम हेतु पेड़ों पर जीनेब का छिड़काव करें।
- आडू एवं आलूबुखारा में भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- धान की फसल में नाइट्रोजन की पहली 1/4 भाग मात्रा कल्ले फूटते समय एवं दूसरी 1/4 भाग मात्रा बालियों में गोभ के निकलने से पहले यूरिया के रूप में ट्रापड्रेसिंग के रूप में डालें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिए 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 कि.ग्रा. यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। जीवाणु झुलसा के लक्षण दिखाई देते ही 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व 500 ग्राम कॉपर–आक्सीक्लोराइड को आवश्यक पानी में घोलकर प्रति है. छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में यदि खेत में औसतन 8–10 प्रतिशत मृत गोभ तना छेदक के तथा 10–15 भूरा फुदका की संख्या प्रति पौधा दिखाई दे तो कीटनाशी का प्रयोग करें।
- उर्द एवं मूंग की शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई करें। इसके लिए मूंग की पंत मूंग–2, पी.डी.एम.–54, नरेन्द्र मूंग–1, पंत मूंग–4 व 5 एवं उड़द के लिए पंत उर्द–19, 35 व 40 व नरेन्द्र उर्द–1 बो सकते हैं।
- अरहर में पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर क्वीनालफास 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा को 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में खरपतवार नियंत्रण के लिए एक निराई करें। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो 4 लीटर प्रति है. की दर से क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें। टिक्का रोग नियंत्रण के लिए खड़ी फसल पर 2.5 ग्राम मैंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की व्यवस्था करें। टमाटर में झुलसा नामक बीमारी के नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें। बैंगन में फल तथा तना छेदक नामक कीट के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें। मिर्च में कीटों तथा बीमारियों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 व 0.15 प्रतिशत मैटासिस्टाक का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन फसल की 45x45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने के लिए गुठलियों की बुवाई करें। नये पौधें तैयार करने के लिए 1 वर्ष पुराना मूलवृंत पर वीनियर कलम बांधने का कार्य करें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए रोगोर (0.2 प्रतिशत) घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

माह सितम्बर:

- अरहर में पत्ती लपेटक एवं फलीबेधक कीट के रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. की 100 मि.ली. दवा एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में फूल बनने एवं खूंटियों के भूमि में प्रवेश तथा फलियों के विकास के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। नमी के अभाव में सिंचाई का प्रबन्ध करें।
- वर्षा न होने पर गन्ना की फसल में सिंचाई करें। गन्ना की दूसरी बंधाई आवश्यकतानुसार करें। कण्डुवा व लालसड़न ग्रसित पौध दिखाई देने पर सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर दें। गुरदासपुर बेधक की रोकथाम के लिए गन्ने के ऊपर का सूखा भाग काटकर नष्ट कर दें।
- तोरिया की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु पी.टी.–30, 303, 507, संगम, भवानी, उत्तरा आदि किस्में उपयुक्त है। बीज दर 3–4 कि.ग्रा. प्रति है. 30 सेमी. की लाईन में 3–4 सेमी. गहरी बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम थाइराम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। उर्वरकों में फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग लाभदायक होता है क्योंकि इसमें 12 प्रतिशत सल्फर की उपलब्धि हो जाती है।
- अच्छी पैदावार व आमदनी प्राप्त करने के लिए इस माह 50x50 सेमी. की दूरी पर टमाटर की रोपाई करें।
- अगेती आलू की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में की जा सकती है। इसके लिए कुफरी चन्द्रमुखी व कुफरी अशोका उन्नत किस्में है।
- नीबू वर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4–डी या नैथ्थलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- बेर में चूर्णित आसिता की रोकथाम हेतु कैराथेन का छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि हेतु-

माह जुलाई:

- टमाटर/मिर्च, अदरक, हल्दी में बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।
- सेब/नाशपाती के बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। कज्जली धब्बा रोग की रोकथाम हेतु जीनेब व ब्लाइटाक्स–50 का छिड़काव करें।
- आड़ू, आलूबुखारा व खुबानी में भूरा विगलन की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व पर्याप्त नमी की दशा में 2.0 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली प्रयोग करें। तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. की क्रमशः 30 मि.ली. व 40 मि.ली. प्रति नाली की दर से 16–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई करें। कमला कीट, क्यूलिआप्स एवं गर्डिल विटिल कीट नियंत्रण के लिए डायमेथोएट 30 ई.सी. 20 मि.ली. दवा प्रति नाली को 16–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक, हल्दी में झुलसा नामक बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम–45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी, लोबिया में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से खड़ी फसल में डालें।
- खीरा वर्गीय फसलों में 10–15 ग्राम यूरिया प्रति थाले की दर से डालें।
- नीबू वर्गीय फल, सेब, नाशपाती, आलूबुखारा एवं खुबानी में फल विगलन की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

माह सितम्बर:

- असिंचित क्षेत्रों में धान एवं मंडुवा में झोंका रोग नियंत्रण के लिए लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम या एडिफन्फास की 14–20 ग्राम मात्रा को 15–20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें। धान में खैरा रोग नियंत्रण हेतु 100 ग्राम जिंक सल्फेट को 400 ग्राम यूरिया अथवा 50 ग्राम बुझे हुए चूने के 20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें। पत्ती लपेटक कीट के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. को 3 मि.ली. प्रति नाली की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च में झुलसा बीमारी/फलों पर धब्बे दिखाई देने पर इण्डोफिल 45 नामक दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन के फल छेदक तथा तना छेदक कीट एवं खीरा वर्गीय फसलों में कीट से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सेब की नर्सरी के बीजू पौधों पर टी–चश्मा चढ़ाएं। सेब/नाशपाती में रूइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टाक्स का छिड़काव करें। दग्ध अंगमारी की रोकथाम हेतु बोर्डो मिश्रण (4:4:50) का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलूबुखारा पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

पशुपालन/मत्स्य पालन एवं अन्य-

माह जुलाई:

- वाह्य परजीवी नाशक का बाड़े में छिड़काव करें। पतले गोबर की बीमारी से बचाव हेतु सूखे चारे की पर्याप्त मात्रा 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दें।
- कुक्कुटों के बिछावन को सूखा रखने के लिए इसकी नियमित गुड़ाई करें। इसके लिए बुझा हुआ चूना 1.25 कि.ग्रा. प्रति वर्ग मी. की दर से मिलायें। चूजों में काक्सीडियोसिस रोग की रोकथाम के लिए उचित उपाय करें।
- तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन (प्लवकों) का निरीक्षण करें। मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जाँच करें एवं पी.एच. 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 3–7 मि.ग्रा. प्रति लीटर रखें। 10–20 कु. प्रति है. प्रति माह कच्चे गोबर का प्रयोग करें।

माह अगस्त:

- पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- तालाब में 25–50 मि.मी. आकार के 10000/है. मत्स्य बीज का संचय करें। गोबर की खाद के प्रयोग से 15 दिनों के बाद एन.पी.के. खादों (यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश) का प्रयोग करें। एन.पी.के. खादों के प्रयोग के 15 दिनों के पश्चात् 10–20 कु./है. गोबर की खाद का प्रयोग करें।

माह सितम्बर:

- यदि पशु मिट्टी खा रहा है तो उसे संतुलित आहार के साथ–साथ 40 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें, साथ ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार अन्तः कृमिनाशक दवा पिलायें। यकृत कृमि, निमोनिया एवं दस्त से बचाव हेतु चिकित्सक की सलाह लें।
- तालाब के पानी में प्लवकों का निरीक्षण करें व संतोषप्रद मात्रा को कायम रखें। मछलियों के भार का 2–3 प्रतिशत की दर से परिपूरक आहार दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- अप्रैल 13, 2016 को संयुक्त कृषि निदेशक, कुमाऊँ मण्डल कार्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) में "खरीफ–2016 में होने वाले मानक प्रजातीय एवं अन्य परीक्षणों के आयोजन" विषयक राज्य स्तरीय खरीफ शोध कार्यशाला की बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- अप्रैल 18, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) का भ्रमण कर केन्द्र द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यों का निरीक्षण एवं अनुश्रवण किया गया। अप्रैल 18, 2016 को ही सायं नैनीताल में मै. अंजकिया कैमटेक लि. द्वारा आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- अप्रैल 22, 2016 को भा.कृ.अ.प.–क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय, जोन–VI, जोधपुर में क्षेत्रीय परियोजना प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- मई 06, 2016 को अपर मुख्य सचिव कृषि, उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में देहरादून में राज्य में जैविक खेती की समीक्षा हेतु आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- मई 07, 2016 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून (उत्तराखण्ड) में प्रसार शिक्षा संस्थान, नीलोखेड़ी के 29वें प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- जून 21, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) एवं जून 22, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) का भ्रमण कर केन्द्रों द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यों की समीक्षा एवं निरीक्षण कर उचित दिशानिर्देश दिये गये।
- जून 27, 2016 को देहरादून में अपर मुख्य सचिव, कृषि विभाग उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में आई.सी.ए.आर. द्वारा संचालित परियोजनाओं तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों हेतु सृजित पदों पर नियुक्त कार्मिकों को राज्य सरकार की पुरानी पेंशन योजना का लाभ अनुमन्य कराये जाने के सम्बन्ध में आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया गया। उक्त बैठक में निदेशक अनुसंधान केन्द्र डा. जे.पी. सिंह भी साथ थे।
- जून 29, 2016 को नैनीताल में संयुक्त संसदीय समिति की आयोजित बैठक में कुलपति डा. मंगला राय, निदेशक अनुसंधान केन्द्र डा. जे.पी. सिंह के साथ प्रतिभाग किया गया।

100वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा 100वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी पन्तनगर में अक्टूबर 17–20, 2016 तक आयोजित की जा रही है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्में, स्वयंसेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्में एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक / शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :–

प्रमुख आकर्षण

- अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगितायें

फल–फूल, शाक–भाँजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता	17–18 अक्टूबर
संकर बछियों की नीलामी (अपरान्ह् 2.00 बजे) शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला	18 अक्टूबर
पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता (पूर्वान्ह् 10.00 बजे) पशु उत्पाद एवं प्रबन्धन विभाग	19 अक्टूबर
विशेष व्याख्यानमाला (अपरान्ह् 2.30 से 3.30 बजे) किसान मेला स्थल	17–19 अक्टूबर
किसान गोष्ठी (अपरान्ह् 3.30 से 6.30 बजे) किसान मेला स्थल	17–19 अक्टूबर
सांस्कृतिक कार्यक्रम (सांय 7 से 8.30 बजे) किसान मेला स्थल	17–19 अक्टूबर
समापन एवं पुरस्कार वितरण (अपरान्ह् 3.00 बजे) किसान मेला स्थल	20 अक्टूबर

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा तथा मेला समन्वयक, डा. टी.पी. सिंह के दूरभाष संख्या 05944–233380 (कार्या.), 234486 (आवास) एवं मो. 07500241498 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक की कलम से

विश्व की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर घटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु खाद्य उत्पादों के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में कीटनाशी, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी, चूहेमार दवाएं व रासायनिक उर्वरकों आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। चूंकि ये रसायन जहरीले होते हैं तथा जिस प्रकार ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों के लिए घातक हैं उसी प्रकार असावधानीपूर्वक खेतों में किए गए इनके प्रयोग से खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव मानव, जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों पर पड़ता है व प्रकृति में जैविक व अजैविक पदार्थों के बीच आदान–प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) भी प्रभावित होता है। यह परिवर्तन वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इन सभी समस्याओं से निपटने हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होगें, जिनके दूरगामी प्रभाव मानव व सभी जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक न हो व वातावरण के लिए सुरक्षित हो। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है। 'जैविक खेती उत्पादन' एक स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित खाद्य उत्पादन की एक लाभकारी तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीकों व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के सफल प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती हेतु रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों के प्रयोग को बढ़ावा देकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों की जानकारी कृषकों तक पहुंचाना जरूरी है। इससे जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी भी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के लाभों से निरन्तर लोगो को अवगत कराने हेतु कृषि विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर 'जैविक कृषि मेले व फूड फेस्टिवल' का भी आयोजन किया जाता है। इसमें प्रदेशभर के किसान कृषि की आधुनिक तकनीकों से जैविक खेती की विधि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं व स्थानीय, देशी व विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक उत्पादों की अच्छी खरीद से जैविक खेती करने वाले किसानों को अपनी फसल का उत्तम लाभ मिलता है।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जहरीले कीटनाशकों व रासायनिक खादों की बहुत ही कम मात्रा या इनके बिना भी खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार भारत के अन्य राज्यों की भांति उत्तराखण्ड में भी 'जैविक खेती' को आधुनिक वैज्ञानिक तरीको से बढ़ाने का व्यापक प्रचार व प्रयास निःसन्देह ही कृषि जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिससे कि ग्रामीणों व स्थानीय लोगों को उत्तम रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के साथ पहाड़ों से तेजी से हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। कृषि बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो–तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है लेकिन उसके बाद उचित वैज्ञानिक तरीकों से उपयोग की गई जैविक खादों, दवाइयों के प्रयोग से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार–प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविज्ञान मुद्रणालय, पन्तनगर